6सेमेस्टर प्रोग्राम/डॉ अनिता मिश्र

## निरालाः जीवन और साहित्य

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का प्रारंभिक नाम सूर्य कुमार त्रिपाठी। जन्म–29 फरवरी सन 1899 ई ,स्थान–महिषादल (मेदिनीपुर) ,पश्चिम बंगाल। मूल निवासी–गढ़ाकोला, उन्नाव, उत्तर प्रदेश। पिता–रामसहाय त्रिपाठी। पत्नी–मनोहरा देवी। पुत्र–रामकृष्ण त्रिपाठी। पुत्री–सरोज। उन्होंने महिषादल के राजा के यहाँ नौकरी किया पर जीविकोपार्जन का अन्य उपाय न होने पर भी उस नौकरी को छोड़ दिया। वे रामकृष्ण मिशन से निकलने वाली पत्रिका 'समन्वय' के संपादक 1922 ई में बने। वे सन् 1923–24 में 'मतवाला' पत्रिका के संपादक बने। मृत्यु–15 अक्टूबर 1961 ई, प्रयाग।

**काव्य–संकलनः** अनामिका ( प्रथम संकलन, प्रकाशन काल–कलकत्ता से 1923 ई में), परिमल (1930 ई), गीतिका, अनामिका (द्वितीय संस्करण 1938 ई), तुलसीदास, अणिमा (1943 ई), बेला (1946 ई), नये पत्ते, आराधना, अर्चना, गीतगुँज, सांध्य–काकली और अपरा (1947 ई)।

**प्रथम कविता–** जूही की कली (रचनाकाल–1916 ई), मतवाला में 1933 ई में छपी।

**उपन्यास**–प्रभावती, कुल्लीभाट , चोटी की पकड़, देवी (1948 ई), काले कारनामे (1950 ई) ,अप्सरा (1931 ई) ,अलका,, निरूपमा, बिल्लेसुर बकरिहा (1941 ई)

**कहानी–संग्रह–** लिली (1933 ई) चतुरी चमार (194 5ई),) सुकुल की बीबी

**शोक गीत–** सरोज स्मृति (1935 ई)

**निबंध संग्रह**–प्रबंध पद्म (1934 ई),प्रबंध प्रतिमा (1940 ई)

**सम्पादक–** समन्वय, मतवाला, सुधा

हिन्दी के छायावादी कवियों में निराला का विशेष स्थान है। वे हिन्दी में मुक्त छन्द के जनक हैं। वे 'परिमल' की भूमिका में लिखते हैं,''मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। मनुष्य की मुक्ति कर्म के बंधन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छंदों के शासन से छुटकारा पाना ''। परिमल के प्रथम खंड में तुकांत कवितायें हैं पर द्वितीय खंड में संकलित कविताओं को उन्होंने 'मुक्त गीत' कहा है। सनृ 1938 में प्रकाशित अनामिका निराला के प्रौढ़ रचनाओं का संकलन है। इसमें प्रेयसी, सरोज–स्मृति, राम की शक्तिपूजा आदि उत्कृष्ट कवितायें संकलित हैं। 'सरोज–स्मृति' हिन्दी का प्रथम शोक गीत ह्वै। इस कविता को कवि ने अपनी पुत्री की मृत्यु के एक वर्ष बाद लिखा था। इस कविता में सरोज के बचपन से लेकर मृत्यु तक की घटनाओं का मार्मिक वर्णन है। कविता में कवि का आर्थिक संघर्ष उजागर हुआ है–

धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,

कुछ भी तेरे हित न कर सका!

जाना तो अर्थोगमोपाय,

पर रहा सदा संकुचित–काय।

'सरोज–स्मृति' कविता में निराला ने समाज में व्याप्त रूढ़ियों और अंधविश्वासों पर करारा व्यंग्य और प्रहार किया है–

ये कान्यकुब्ज कुल कुलांगार

खाकर पत्तल में करे छेद,

इनके कर कन्या अर्थ खेद

इस विषय बेलि में विष ही फल,

यह दग्ध मरुस्थल—नहीं सुजल।

'राम की शक्ति पूजा' (1936ई) एक लम्बी कविता है। राम की शक्ति पूजा' के राम अलौकिक राम नहीं हैं इसलिए उनका मन संशयग्रस्त रहता है। राम , रावण को पराजित करने के लिए शक्ति की उपासना करते हैं। निराला ने मिथक कथा को आधार बना कर स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए भारतीयों को प्रेरित किया है। कवि ने संकेत किया है कि विदेशी शक्ति को पराजित करने के लिए भारतीयों को अपने अंदर एकाग्रता लाना होगा, शक्ति का संचय करना होगा और संगठित होना होगा। कविता में निराला का व्यैक्तिक जीवन—संघर्ष भी प्रगट हुआ है । उन्हें आजीवन विरोधियों का सामना करना पड़ा। वे कहते हैं—

धिक् जीवन जो पाता ही आया है विरोध

धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।

'तुलसीदास' में कवि निराला ने तुलसीदास के जीवन और तत्कालीन समाज का चित्रण किया है। कवि ने तुलसी के माध्यम से ह्रासोन्मुखी भारतीय संस्कृति और उसके लिए जिम्मेवार लोगों पर व्यंग्य किया है। कवि भारतीयों को सचेत करने का प्रयास करता है और भारत के गौरवशाली मूल्यों की प्रतिष्ठा करता है। डॉ राम विलास शर्मा ने इस रचना को 'एपिक क्वालिटी' से ओतप्रोत बताया है।

'कुकुरमुत्ता' एक लम्बी, व्यंग्यात्मक कविता है। इसमें कुकुरमुत्ता सर्वहारा का और गुलाब पूँजिपतियों का प्रतीक है।

कवि निराला की व्यंग्यात्मक कवितायें अनामिका, बेला, नये पत्ते और कुकुरमुत्ता में संकलित हैं।

अर्चना, गीतगुंज और गीतिका में कवि के गीत संकलित हैं। इनके गीत राग—रागिनियों से बंधे नहीं हैं। ये नये स्वर—ताल से युक्त हैं।

निराला की कविताओं में विद्रोह और क्रांति का स्वर है। वे क्रांति की सार्थकता किसानों की मुक्ति में देखते हैं। वे 'बादल राग' कविता में किसानों की मुक्ति के लिए वीर बादलों का आह्वान करते हैं। तत्कालीन समाज के यथार्थ चेहरे को निराला के काव्य में देखा जा सकता है। उनकी कविताओं में आर्थिक विषमता, अन्याय, अत्याचार और विभेद के प्रति विद्रोह का स्वर सुनाई पड़ता है। उसमें व्यथा और वेदना है। पीड़ित मानवता के प्रति सहानुभूति है।

**कथा साहित्य–**

निराला के अधिकांश कहानियों के केन्द्र में स्त्रियों की समस्यायें हैं। 'पद्मा और लिली' कहानी में अंतर्जातीय विवाह को दिखाया गया है। 'ज्योतिर्मयी' और' श्यामा' कहानी में विधवा–विवाह को दिखाया गया है। 'कमला' में पत्नी पर पति के अत्याचार को दिखाया गया है। 'चतुरी चमार' कहानी के केन्द्र में 1931–32 ई का बैसवाड़ा का समाज और जीवन है। चतुरी अछूत है। उसके माध्यम से लेखक ने अछुतों के संघर्ष को दिखाया है तथा उनकी चेतना को जगाने का प्रयास किया है। 'सुकुल की बीबी' संस्मरणात्मक कहानी है।

'अप्सरा' उपन्यास में किसान जीवन की एक झलक मात्र है । प्रथम विश्व युद्ध के बाद भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन का नेतृत्व महात्मा गांधी करते हैं। वे देखते हैं कि जमींदारों के विरुद्ध किसानों के संघर्ष में कांग्रेस किसानों का साथ नहीं देती है। 'अलका' उपन्यास में अवध के किसानों के संघर्ष का और सामाजिक रूढ़ियों का यथार्थ चित्रण किया गया है। सन् 1935 में रचित उपन्यास 'निरूपमा' में लेखक स्त्री–मुक्ति का समर्थन करता है।

देवी' व्यंग्य प्रधान उपन्यास है। उपन्यास के केन्द्र में पगली भिखारिन है।

'कुल्ली भाट' उपन्यास के केन्द्र में डलमउ गाँव है। उपन्यास में लेखक की दृष्टि अछूत– समस्या और हिन्दू–मुस्लिम समस्या पर गई है। उपन्यास का नायक कुल्ली है, जो अछूत है। डॉ रामविलास शर्मा का कहना है,''कुल्लीभाट में निराला ने अपने ब्याह और गौने की कहानी लिखी है, दूसरी कहानी परिवार के नाश औा बंगाल में हिन्दी सिखने की है ,तीसरी कहानी अछूतों में कुल्ली के काम करने की है। निराला ने इसे जीवन–चरित्र मानकर लिखा है; वह जितना दूसरे का जीवन–चरित है, उतना स्वयं निराला का आत्म–चरित है।''

'बिल्लेसुर बकरिहा' उपन्यास का नायक बिल्लेसुर है। वह एक गरीब ब्राह्मण है। उपन्यास में लेखक ने दिखाया है कि ब्राह्मणों में भी भेदभाव होता है। कुल्ली जीविकोपार्जन के लिए बकरियाँ पालता है पर जब पेट नहीं भरता तब काम की तलाश में बंगाल पलायन करता है। वह बर्दवान के महाराजा के जमादार के यहाँ काम करता है। वह जमादार से गुरूमंत्र लेता है और उसका अत्याचार सहता है। वह गुरूमंत्र से सिपाही की नौकरी प्राप्त करने की असफल कोशिश करता है। अंत में गुरूमंत्र त्यागकर गाँव लौट आता है। वह जीने के लिए कभी बकरी पालता है और कभी खेती करता है पर उसकी आर्थिक समस्या का समाधान नहीं हो पाता है। वह सर्वत्र ठगी का शिकार होता है। हनुमान जी उसकी बकरियों की देखरेख नहीं करते और मंत्र उसे नौकरी नहीं दिला पाता। निराला ने बिल्लेसुर के माध्यम से पशु–पालन और कृषि संस्कृति से जुड़े लोगों के संघर्ष को दिखाया है।

'चोटी की पकड़' उपन्यास का संबंध बंगाल के स्वदेशी आन्दोलन से है।

'काले कारनामे उपन्यास में ग्रामीण जीवन उभर कर आया है।

सन् 1939 (फरवरी) में रुपाभ में प्रकाशित 'चमेली' उपन्यास निराला का अंतिम और अधूरा उपन्यास है।

,

सूर्य कुमार त्रिपाठी